Subject: – Sociology Date: – 22/04/2020 ①
Class: – B-II (H) Paper: – 3rd
Topic: – संस्कृतिकरण और इसकी विशेषताएँ

By: – Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga
9507941619

Online Study Material No: – (45)

संस्कृतिकरण

(Sanskritization)

आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया को संस्कृतिकरण कहा गया है। समाजशास्त्र में इस अवधारणा का प्रतिपादन का श्रेय Dr. M. N. Shree Niwas को है। डॉ॰ श्रीनिवास ने अपने शोध ग्रंथ "The Religion & Society among the Kurgs" में सर्वप्रथम इस अवधारणा का विवेचन किया था। इसके बाद उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Social change the modern India" में भी संस्कृतिकरण का विवेचन किया है। संस्कृतिकरण एक विशिष्ट प्रकार का सामाजिक परिवर्तन है। सामाजिक परिवर्तन के इस प्रक्रिया का सीधा सम्बन्ध स्तरीकरण की व्यवस्था से है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत जातिय गतिशीलता होती है।

नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, पश्चिमीकरण के समान ही संस्कृतिकरण भी सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। संस्कृतिकरण शब्द दो शब्दों के मेल से बना है, पहला शब्द 'संस्कृति' है। संस्कृति मनुष्य का सीखा हुआ व्यवहार है एवं दूसरा शब्द 'करण' है। जिसका अर्थ ग्रहण करना या अनुकरण करना है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि नगर के विशेषताओं को ग्रहण करना ही नगरीकरण कहलाता है या उद्योग के व्यवहारों के अनुकरण को सीखना औद्योगिकरण होता है या पश्चिमी समाजों के व्यवहारों, रहन-सहन के ढंगों को सीखना ही पश्चिमीकरण है।

Dr. M. N. Shree Niwas के अनुसार, "संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई नीच हिन्दू जाति या जनजाति या अन्य समूह किसी उच्च या द्विज जाति की दिशा में अपने रीति-रीवाज, कर्मकांड,

Scanned with CamScanner

विचारधारा और जीवन पद्धति को बदलना है। आमतौर ऐसे परिवर्तनों के बाद वह जाति परम्परा से स्थानीय समाज द्वारा सोपान में जो स्थान उसे मिला हुआ है उसे ऊँचे स्थान का दावा करने लगती है।"

संस्कृतिकरण वास्तव में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है जो भारतीय सामाजिक स्तरीकरण को प्रभावित करती है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत विभिन्न निम्न जातियाँ अपने सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को उच्च जातियों के जीवन के अनुकूल बनाता है। उदाहरणार्थ जब भारत में आयू जातियों कि सामाजिक स्थिति उच्च एवं अनार्य जातियों की सामाजिक स्थिति निम्न मानी जाती थी तब भी संस्कृतिकरण की प्रक्रिया चलू रही थी।

Prof. V. Raghavan के अनुसार, "संस्कृतिकरण ग्रहण एवं बहुपक्षीय प्रक्रिया है जिसका केवल एक अंश ही संरचनात्मक सन्दर्भ रखता है। इसकी छाप भाषा, साहित्य, वैचारिकी, संस्कृत, नृत्य, जीवन के ढंग और संस्कार पर दिखाई देती है।"

संस्कृतिकरण की विशेषताएँ
(Characteristic of Sanskritization)

1. जातिय गतिशीलता का प्रयास :- संस्कृतिकरण जातिय गतिशीलता के प्रयास की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत विभिन्न निम्न जातियाँ, जनजातियाँ अपने समूहों द्वारा अपने सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास करता है।
2. तटस्थ अवधारणा :- संस्कृतिकरण अपने आप में एक तटस्थ सांस्कृतिक परिवर्तन द्योतक है। इसमें अच्छाई या बुराई का कोई तत्व विद्यमान नहीं है। अर्थात हम यह नहीं कह सकते कि निम्न जातियों द्वारा अपनेआपको उच्च जातियों के अनुरूप बनना अच्छा है या बुरा।
3. मन्द गति की प्रक्रिया :- संस्कृतिकरण की प्रक्रिया सामाजिक परिवर्तन की एक मन्द प्रक्रिया है। इस सम्बन्ध में निवास का कहना है कि "साधारणतः बहुत दिनों तक बल्कि वास्तव में एक-दो पीढ़ियों तक दावा किये जाने के बाद ही उसे स्वीकृति मिलती है।"

Scanned with CamScanner

4. प्रभु जाति का अनुसरण :- संस्कृतिकरण के प्रक्रिया के अन्तर्गत विभिन्न निम्न जातियाँ उच्च जातियों का अनुकरण करती है। उच्च जाति से हमारा तात्पय परम्परागत उच्च जाति अर्थात ब्राह्मणों से नही वरन उच्च जाति का निर्धारण स्थानीय होता है। कोई भी जाति विभिन्न साधनों से सम्पन्न होने पर स्थानीय उच्च जाति का पद ग्रहण कर लेती है।

5. सर्वदेशिक प्रक्रिया :- संस्कृतिकरण एक सर्वदेशिक प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया पुरे भारत में व्याप्त है। श्री निवास के अनुसार "संस्कृतिकरण ऐसी सांस्कृतिक और सामाजिक प्रक्रिया है जो भारत के विभिन्न भागों में व्यापक रूप में पायी जाती है। यह नील, ओराव जैसे जनजाति समूहों में भी सक्रिय है।"

6. प्राचीन प्रक्रिया है :- संस्कृतिकरण का व्यवस्थित अध्ययन केवल वर्तमान युग में हुआ है परन्तु यह प्रक्रिया भारतीय समाज में आर्य सभ्यता काल में भी थी। डॉ० श्रीनिवास के शब्दों में, "संस्कृतिकरण भारतीय इतिहास में निरंतर से चलती आ रही है और आज भी चल रही है।"

7. संस्कृति परिवर्तनशील है :- संस्कृतिकरण एक परिवर्तनशील प्रक्रिया है। हम अपने परम्परागत भारतीय संस्कृति को छोड़ते जा रहे हैं एवं पश्चिमी संस्कृति को बहुत ही तेजी से ग्रहण करते आ रहे है।

8. यह पदमूलक परिवर्तन है संरचनात्मक नही :- संस्कृतिकरण जातिय गतिशीलता की एक प्रक्रिया है परन्तु यह परिवर्तन पद मूलक है। विभिन्न जातियों की सामाजिक स्थिति तो परिवर्तन हो जाती है परन्तु जाति व्यवस्था पर कोई प्रभाव नही पड़ता।

Dr. S. N. Choudhary
Guest Teacher, Deptt. of Sociology
Marwari college, Darbhanga

Scanned with CamScanner